Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 8, August - 2023 Publication Date: 05/08/2023

DOIs:10.2018/SS/202308002 --:-- Research Paper / Article / Review

वैश्विक आपदाऐं और भारत की भूमिका

डॉ. सोनाली टाँक
सहायक आचार्य (विद्यासंबल योजनान्तर्गत, राज. सरकार)
राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, पुष्कर,
अजमेर (राजस्थान), भारत ।
ई-मेल : tank.sonali18@gmail.com

सारांश : प्रस्तुत शोध पत्र में अप्रत्याशित प्राकृतिक आपदाओं से निपटने में भारत की सक्रिय भूमिका का विस्तृत विवेचन किया गया है। भारत अपनी भू-स्थैतिक परिस्थितियों के कारण स्वयं प्राकृतिक आपदाओं से ग्रसित रहा है। अतः प्राकृतिक विपत्तियों से होने वाली हानियों के प्रति भारत सदैव सजग है। सर्वविदित है भारत विविध संस्कृतियों वाला देश है। अतः अप्रत्याशित घटनाओं का सामना करते समय विभिन्नता में एकता बनाए रखने का प्रयास सदैव किया जाता है। भारत ने न केवल राष्ट्रीय आपदाओं के समय अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली विपदाओं का सामना करने में भी मानवीय भूमिका का परिचय दिया है।

मुख्य बिन्दु: प्राकृतिक आपदायें, वसुधैव कुटुम्बकम, भारत की भूमिका, मानवीय सहायता, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाऐ, वैज्ञानिक प्रणाली।

1. प्रस्तावना:-

वसुधैव कुटुम्बकम भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है। अर्थ है समस्त वसुधा हमारा कुटुम्ब / परिवार है। जिस प्रकार कुटुम्ब पर आई विपत्तियों का सामना सभी सदस्य मिलजुल कर करते है। उसी तरह वसुधा पर आई विपत्तियों का मुकाबला समस्त वसुधावासी द्वारा मिल का ही किया जा सकता है। भारत ने इस दिशा में अग्रसर रहकर वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को हमेशा सार्थक किया है। विश्व में जहाँ कही भी प्राकृतिक आपदाऐं आई भारत ने मानवीय सहायता के साथ-साथ यथासम्भव भौतिक सहायता भी प्रदान की है।

2. शोध उद्देश्य:-

- प्राकृतिक आपदाओं से निपटने में भारत की सक्रियता व क्षमता का वर्णन करना।
- वसुधैव कुटुम्बकम के मूलमंत्र को विश्व के समक्ष व्यवहारिक रुप में वर्णित करना।
- वैश्विक स्तर पर भारत की सकारात्मक मानवीय भूमिका को परिलक्षित करना।

शोध प्रविधि:-

- प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक व द्वितीयक आकँडो का प्रयोग किया गया है।
- वेबसाईट, ब्लॉग इत्यादि में उपलब्ध सामग्री का अन्वेषण किया गया है।
- समाचार पत्र पत्रिकाओं, इत्यादी में प्रकाशित सामग्री का अन्वेषण किया गया है।

प्रकृति और मानव का संबंध सदैव से समानुपाती रहा है। जब मानव प्रकृति के अनुकूल व्यवहार करता है तब प्रकृति भी मानव को कई गुना प्रतिफल बदले में देती है। परन्तु जब यही मानव प्रकृति के प्रतिकूल व्यवहार करने लगता है तो पर्यावरण असंतुलित होने लगता है और प्रकृति अपना रौद्र रुप धारण करती है। परिणामस्वरुप बाढ़, सूखा, भूकम्प, ज्वालामुखी, आंधी,

तूफान, चक्रवात, अतिवृष्टि, अल्पवृष्टि आदि जैसी प्राकृतिक आपदायें सामने आती है। वैसे भी विश्व जैसे जैसे वैज्ञानिक प्रगति करता जा रहा है वैसे - वैसे प्रकृतिजन्य विपत्तियाँ स्वतः ही आमंत्रित होती जा रही है। से आपदायें जिस भी क्षेत्र में आती है केवल वही क्षेत्र इससे प्रभावित नहीं होता अपितु शेष विश्व भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप से प्रभावित होता है। ये आपदायें क्षेत्रों को आन्तरिक नुकसान तो पहुँचाती है साथ ही उन क्षेत्रों के बाहरी / विदेशी सम्बन्धों को भी परिभाषित करती है।

भारत के विदेशी संबन्ध सदैव वैश्विक संतुलन को बनाए रखने का प्रयास करते है। इसके पीछे की वजह है - भारतीय सांस्कृतिक शिक्षा। भारतीय जीवन दर्शन का सार वाक्य है -"वसुधैव कुटुम्बकम" जो संस्कृत वाक्यांश है जिसका अर्थ है - "सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है।" यह वाक्य महाउपनिषद से लिया गया है। भारत ने अपने विदेशी संबन्धों की स्थापना में सदैव इस वाक्यांश को परिलक्षित करने का प्रयास किया है। विश्व में जहाँ कहीं भी प्राकृतिक आपदायें आई भारत ने मानवीय सहयोग का बहुत सुन्दर परिचय दिया है। इसी वर्ष के प्रारंम्भ मे जब 6 फरवरी 2023 में तुर्किये - सीरिया में विनाशकारी भूकंप आया तब भारत ने द्रुत गति से 'ऑपरेशन दोस्त' के माध्यम से वहां हर सम्भव सहायता पहुँचाई। जबकी सर्वविदित है की भारत-तुर्किये संबन्ध सदैव तनावपूर्ण रहे है। भारत के तुर्किये में ऑपरेशन दोस्त मिशन ने बिना किसी पंथ, राष्ट्रीयता या राजनीतिक पूर्वाग्रह से वसुधैव कुटुम्बकम के विचार को साकार करते हुए विश्व स्तर पर सराहनीय कार्य किया। अमेरिका में पाकिस्तान के राजदूत रहे हुसैन हक्कानी ने "द डिप्लोमेट" में लिखा है कि बहुध्रुवीय विश्व में भारत एक वैश्विक शक्ति बनने की इच्छा के साथ आगे बढ़ रहा है। तुर्की-सीरिया में भारत ने जिस बडे पैमाने पर राहत सामग्री भेजी है उससे स्पष्ट है कि भारत आपदा की हर स्थिति में आगे भी मदद पहुँचाने के लिए तत्पर है। [1]

अतीत से जुडे आँकडो और सूचनाओं को खोजे तो भारत की सदैव सकारात्मक भूमिका दिखाई दी है। 2004 की सुनामी और 2015 के नेपाल में आए भूकंप के बाद भारत की मानवीय सहायता और आपदा राहत की नीति तेजी से पडोसी देशों की ओर निर्देशित हुई। भारत मे आपदा प्रबंधन के लिए भारतीय प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) शीर्ष निकाय के रुप में कार्यरत है। आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 के द्वारा राष्ट्रीय आपदा प्राधिकरण की स्थापना और राज्य तथा जिला स्तरों पर संस्थागत तंत्र के लिए एक सक्षम वातावरण का निर्माण अनिवार्य किया गया है। [2] राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर इस संस्था द्वारा बेहतर ढंग से कार्य किया जाता रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दृष्टि दे तो संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2021 में जलवायु परिवर्तन और आपदाओं के चलते भारत में लगभग 50 लाख लोगो को आतंरिक रुप से विस्थापित होना पडा। यूएन रिफ्यूजी एजेन्सी (UNHCR) की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2021 में हिंसा, मानवाधिकारों के हनन, जलवायु संकट, खाद्य असुरक्षा, युक्रेन में युद्ध और अफ्रीका से अफगानिस्तान तक अन्य आपात स्थितियों के कारण वैश्विक स्तर पर दस करोड लोग अपना घर छोडने पर विवश हुए। विश्व बैंक के भारतीय डायसपोरा के द्वारा भेजे गये वित्त प्रेषण से सम्बन्धित 2018 की रिपोर्ट के अनुसार प्राकृतिक आपदाओं से पिछले 20 वर्षो में सबसे ज्यादा आर्थिक क्षति जिन देशों को पहुची है उनमें शामिल है - अमेरिका (945 बिलियन डॉलर), चीन (492 बिलियन डॉलर), जापान (376.3 बिलियन डॉलर), भारत (80 बिलियन डॉलर) और प्यूर्टो रिको (71.7 बिलियन डॉलर) आदि। [3]

भारत:- एक सकारात्मक मानवीय भूमिका

भारत अपनी अनूठी भू-स्थैतिक - जलवायु परिस्थितियों के कारण पारम्परिक रुप से प्राकृतिक आपदाओं के प्रति संवेदनशील रहा है। तीव्र आर्थिक और वैज्ञानिक विकास के साथ-साथ प्रकृतिजन्य घटनाएं भी तीव्र और अप्रत्याशित होती जा रही है। आपदा प्रबंधन में भारत अग्रणी देश है और वैश्विक स्तर पर भी इन चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है। इसी वर्ष फरवरी 2023 में तुर्की में 'ऑपरेशन दोस्त' के माध्यम से सहायता करते हुए भारत ने जिस मानवीय सदभाव का परिचय दिया उससे समूचे विश्व को यह सिद्ध हुआ कि भारत एक समानुभूतिक, मजबूत और विकास की ओर तीव्र गति से बढता हुआ निपुर्ण देश है। अतीत में ऐसे अनेक अवसर हुए जब वैश्विक विपत्तियों से निपटने में भारत ने सकारात्मक मानवीय भूमिका निभाई।

वर्ष 2004 में श्रीलंका में सुनामी आई। भारत सरकार द्वारा ऑपरेशन रेनबो शुरु किया गया और तत्काल मानवीय सहायता पहुँचाई। ढाई माह से अधिक समय तक चलने वाला यह देश के बाहर भारत द्वारा किया गया सबसे बडा राहत अभियान रहा। वर्ष 2004 की सुनामी के बाद भारत ने मालदीव की सहायतार्थ ऑपरेशन कैस्टर चलाया। वर्ष 2006 में अमेरिका के खाडी तट पर तूफान कैटरीना ने विनाश किया। भारत ने अमेरिकी रेडक्रॉस को 5 मिलियन डॉलर का दान दिया और 25 टन राहत सामग्री

पहुचाँई। वर्ष 2008 में म्यांमार में आए नरगिस नामक चक्रवात में लगभग डेढ लाख लोग मारे गये। भारत ने म्यांमार को राहत सामग्री के साथ ही आर्थिक सहायता भी प्रदान की। वर्ष 2011 में जापान में आयी सुनामी के दौरान भी भारत ने जापान में NDRF के 46 सदस्यों को सहायतार्थ भेजा। वर्ष 2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप से निपटने हेतु भारत सरकार द्वारा ऑपरेशन मैत्री चलाया गया। लगभग 40 दिनों तक कार्य करते हुए भारत द्वारा हर संभव सहायता की गई। [4] वर्ष 2020 के प्रारंभ में कोरोना महामारी से पूरा विश्व ग्रसित हो गया। इस समय जब स्वयं भारत कोरोना वायरस से लड़ने का हर संभव प्रयोग कर रहा था तब भारत ने अन्य देशों की भी इस वायरस से लडने में यथासंभव सहायता की। भारत के इन प्रयासों के फलस्वरुप जनवरी 2021 तक आते-आते भारत ने कोरोना वायरस से बचाव हेतु कोविशील्ड और कोवैक्सीन नामक दो स्वदेशी कोविड-19 वैक्सीन निर्मित की जिसे ड्रग्स कंट्रोलर जनरल ऑफ इण्डिया ने आपातकालीन इस्तेमाल की मंजूरी दी। भारत द्वारा वैक्सीन मैत्री के तहत लगभग 95 देशों से अधिक देशों को कोरोना वैक्सीन भिजवाई गई। इसके साथ ही अन्य दवाएँ व खद्यान्न भी उपलब्ध कराया गया। [5]

उपरोक्त वर्णित तथ्यों की छवि भारत के प्राचीन इतिहास में देखी जा सकती है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मैत्री धर्म और मानवता धर्म का निर्वाह करना प्राचीन भारतीय चिंतन की परंपरा रही है। प्राचीन भारतीय चिंतकों में मनु ने अपने ग्रन्थ मनुस्मृति में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के विचार में विजिगीषु राज्य का उल्लेख किया है। जिसका अर्थ है धर्म नीति का पालन करते हुए राष्ट्र का विकास तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अन्य राष्ट्रों के साथ सहयोग करने वाला राज्य। मनु द्वारा दिए गए विजिगीषु राज्य के विचार को भारत ने हमेशा आत्मसात किया है। इसी तरह के विचार भारतीय चिंतक कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी दिखाई देते हैं। कौटिल्य ने अपने ग्रन्थ अर्थशास्त्र में जीवन जीने की चार विधाओं का उल्लेख किया है- त्रयी, अन्वीक्षिकी, वार्ता और दंडनीति। इन विधाओं द्वारा जीवन के सभी धर्म और शासन के सभी कार्यों को सुचारु रुप से पूरा किया जाता रहा है। यहां दंड नीति सबसे महत्वपूर्ण है जिसका आशय धर्म / कर्तव्य पालन से है। उपरोक्त तीनों विधाओं की सफलता दंडनीति में ही निहित है। इसी क्रम में महर्षि वाल्मीकि ने अपनी कृति रामायण में तथा महर्षि व्यास ने महाभारत में राजनीतिक एवं प्रशासनिक कार्यों से संबंधित कर्तव्यों व दायित्वों को 'राजधर्म' व 'क्षेत्रधर्म' संज्ञा दी। भारत द्वारा राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किए जाते रहे सभी मानवीय प्रयासों में इन महान भारतीय चिंतकों के विचारों की छवि दिखाई पड़ती है। इनके द्वारा दी गई शिक्षा हमारे जीवन जीने की अमूल्य धरोहर है।

वैश्विक संस्थाओं की भारत के प्रति अनुकूल प्रतिक्रिया:-

वैश्विक जगत में भारत की इसी सकारात्मक भूमिका का परिणाम है कि वर्तमान में भारत पहली बार G-20 देशों की अध्यक्षता कर रहा है। भारत का G-20 अध्यक्षता का विषय है - "वसुधैव कुटुम्बकम" अर्थात "एक पृथ्वी, एक कुटुम्ब, एक भविष्य"। वर्तमान की यह उपलब्धि अतीत में किये गये प्रयासों का ही परिणाम है। जून 2019 में भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने G-20 के ओसाका समिट के दौरान ही जापान के तत्कालीन दिवंगत प्रधानमंत्री शिंजो आबे के साथ हुई बैठक में ग्लोबल कोलिएशन फॉर डिजास्टर रेसिलिएंट इंफ्रास्ट्रचर के गठन का मुद्दा उठाया और समर्थन मांगा। ब्रिटेन व जापान ने इस पर अपनी सहमति भी प्रकट की। भारत की इस दिशा में सकारात्मक पहल का परिणाम वर्ष 2020 में दिखाई दिया जब भारत को सर्वसम्मति से ग्लोबल फेसिलिटी फॉर डिजास्टर रिडक्शन एण्ड रिकवरी (GFDRR) का सहअध्यक्ष चुना गया। GFDRR एक वैश्विक साझेदारी है जो विकासशील देशों को प्राकृतिक आपदाओं, जलवायु परिवर्तन से जुडे जोखिमों को समझने में मदद करता है तथा यह विश्व भर में आपदा चुनौतियों से निपटने के लिए उन्हें वित्तिय सहायता प्रदान करने वाली अनुदान पोषण क्रिया विधि है। इसका प्रबंधन विश्व बैंक द्वारा किया जाता है। वर्ष 2015 में भारत GFDRR के परामर्शकारी समूह का सदस्य बन गया था। [6] विश्व बैंक द्वारा दिसम्बर 2022 में जारी रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक प्रतिकूलताओं से निपटने में भारत अच्छी तरह से तैयार है क्योंकि पिछले कुछ वर्षो में "आत्म निर्भर भारत", "मेक इन इण्डिया", वॉकल फॉर लॉकल, स्टैड अप इण्डिया योजना, आयुष्मान भारत योजना जैसी कई नीतियाँ सफल सिद्ध हुई है। [7]

परिवर्तित होती वैश्विक परिस्थितियों में अपनी सकारात्मक भूमिका को बढाने के उद्देश्य से कुछ दिन पूर्व ही नई दिल्ली में वॉइज ऑफ द ग्लोबल साउथ समिट का वर्चुअल आयोजन हुआ। भारत के निमंत्रण पर 125 देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए जो इस बात को दर्शाता है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की मानव केन्द्रित सोच के प्रति अनुकूलता बढ़ रही है। [8] इसी वर्ष 4 अप्रैल 2023 में भारतीय प्रधानमंत्री ने 40 देशों के 5 वें अन्तर्राष्ट्रीय आपदारोधी अवसंरचना (ICDRI) सम्मेलन को विडियों कॉन्फ्रेंसिग के माध्यम से सम्बोधित करते हुए कहा कि किसी एक जगह की आपदा का दुनिया के किसी दूसरे हिस्से में भी व्यापक प्रभाव पड सकता है क्योंकि दुनिया आपस में बेहद करीब से जुडी हुई है। अतः आपदाओं से निपटने की कोशिश अलग-अलग नहीं बल्कि एकीकृत

होनी चाहिए। [9] आपदा प्रबंधन में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग बढाने की दिशा में 18 मई 2023 को भारत व जापान के मध्य उच्च स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया। भारत के राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) और जापान इटंरनेशनल कारपोरेशन एंजेसी (JICA) ने संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में आपदा जोखिम न्यूनीकरण (SFDRR) 2015-2030 के लिए "सेडांई फ्रेमवर्क" की मध्यावधि समीक्षा की उच्च स्तरीय बैठक के दौरान एक जोखिम न्यूनीकरण हब कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य 'सहनीय और सतत भविष्य की दिशा में आपदा जोखिम में कमी लाने के लिए निवेश को बढावा देने में देशों की भूमिका' विषय पर चर्चा करना था। [10] सेडांई फ्रेमवर्क से पूर्व भी वैश्विक स्तर पर दो कार्य योजनाएँ बनाई जा चुकी है। पहली 1994 में योकोहामा स्ट्रेटजी एंड प्लान ऑफ़ एक्शन तथा दूसरा 2005 से 2015 के लिए ह्यूगो फ्रेमवर्क फॉर एक्शन का गठन। उद्देश्य था एक सुरक्षित विश्व का निर्माण करना।

यहाँ "सेडांई फ्रेमवर्क" को जानना आवश्यक है। सेडांई फ्रेमवर्क 2015-2030 आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए 2015 के बाद के विकास एजेण्डे का पहला बडा और प्रगतिशील समझौता है। जिसका उद्देशय 2030 तक आपदाओं के कारण महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे को होने वाले नुकसान और प्रभावित लोगों की संख्या को कम करना है। यह 15 वर्षो के लिए स्वैच्छिक और गैर-बाध्यकारी समझौता है। जिसके अन्तर्गत आपदा जोखिमों को कम करने के लिए राज्य की भूमिका को प्राथमिक माना गया है। [11]

आपदा प्रबंधन की दिशा में भारत अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसियों के साथ भी प्रारंभ से ही सक्रिय रहा है। नवम्बर 2005 में ढाका में 13वें सार्क शिखर सम्मेलन में राष्ट्रीय आपदाओं की तैयारी व शमन के लिए क्षेत्रीय सहयोग को बढाने तथा सार्क आपदा प्रबंधन (SDMC) की स्थापना का प्रस्ताव भारत द्वारा दिया गया। जिसे स्वीकार करते हुए 10 अक्टूबर 2006 को नई दिल्ली में सार्क आपदा प्रबंधन केंद्र का उद्घाटन किया गया। इसी क्रम में जून 2016 में SDMC की एक अंतरिम इकाई नई दिल्ली में स्थापित की गयी जिसे बाद में नवम्बर 2016 में गांधीनगर, गुजरात आपदा प्रबंधन संस्थान परिसर मे स्थानान्तरित कर दिया गया जो वर्तमान में कार्यरत है। [12] इसी तरह एशियाई आपदा न्यूनीकरण केंद्र (ADRC) की स्थापना 1998 में कोबे, जापान में की गयी। इसके 28 संस्थापक सदस्य देशों में भारत भी शामिल है। अभी इसके 29 सदस्य देश है। सदस्य देशों में आपदा प्रबंधन में सहयोग बढाना, सुरक्षित समुदायों का निर्माण करना जो सतत विकास में सहयोग करे जैसे उद्देश्यों के साथ ADRC कार्यरत है। एशियाई आपदा तैयारी केंद्र (ADPC) की स्थापना 1986 में बैकांक, थाईलैण्ड मे की गयी जिसका उद्देशय एशिया प्रशांत क्षेत्र में आपदा तैयारी और शमन में सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना है। भारत सरकार के केन्द्रीय गृह सचिव वर्ष 2000 से ADPC के न्यासी बोर्ड के सदस्य के रुप में इसकी बैठकों मे भाग लेते रहते है। आसियान क्षेत्रीय मंच (ARF) की स्थापना 1994 में हुई। भारत 1996 में इसमें शामिल हुआ। इसका उद्देशय एशियाई क्षेत्र में सुरक्षा और शांति बढाने हेतु सामुदायिक संवाद और गठबंधन करने हेतु मंच उपलब्ध कराना है। भारत ARF की बैठकों और आपदा राहत अभ्यासों में सक्रियता से भाग लेता रहा है। [13]

वैज्ञानिक प्रणालियों का उपयोग:-

इसके अतिरिक्त प्रभावी निर्णय लेने के लिए आपदा से सम्बन्धित प्रणाली का उपयोग करते हुए समय पर जानकारी प्रदान करनी वाली राष्ट्रीय डेटाबेस सेवांए (NDEM) 2013 से चालू हो गयी है। NDEM अनिवार्य रुप से आपातकालीन स्थितियों कें दौरान निर्णय लेने में आपदा प्रबंधकों की सहायता के लिए निर्णय समर्थन प्रणाली उपकरणों के सेट के साथ पूरे देश के लिए GIC आधारित डेटा के राष्ट्रीय भण्डार के रुप में कार्य करता है।

भुवन पोर्टल और MOSDAC भी घोषणाओं और अलर्ट के तहत अन्य आपदाओं से निपटनें के लिए इनपुट प्रदान करता है। NDEM सेवाओं की स्थापना गृह मंत्रालय भारत सरकार के आदेशों के तहत NRSC / इसरो के द्वारा की गई है। इसी के अन्तर्गत कार्यरत DOS प्रणाली अन्तर्राष्ट्रीय आपदा कार्यक्रमों के तहत उपग्रह डेटा समर्थन प्रदान करती है। ये सेवाएं कंबोडिया, चीन, इण्डोनेशिया, इराक, जापान, म्यामांर, नेपाल, ओमान, फिलिपिंस, श्रीलंका, ताइवान, तजाकिस्तान, थाइलैण्ड, वियतनाम सहित कई देशों के लिए उपलब्ध है। [14]

निष्कर्ष:-

गौरतलब है कि आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में भारत राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही स्तरों पर बेहतरीन कार्य कर रहा है। निष्कर्ष के रुप में कहा जा सकता है कि भारत अपनी सांस्कृतिक मूल्यों के साथ चलते हुए विश्व के समक्ष सदैव सहायक देश के रुप में

उपस्थित होता रहा है। हमारे देश के ऋषियों मुनियों द्वारा जो आदर्श संस्कार यहां स्थापित किए गए है भारत राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर उनका सदैव पालन करता है। यही कारण है कि जब यूक्रेन-रुस युद्ध मे विश्व दो गुटों में बटता नजर आ रहा था तब भी भारत ने दोनों देशों के प्रति सहयोगात्मक रवैया अपनाया। पश्चिमी देशों द्वारा यह कहना कि यूक्रेन-रुस युद्ध का समाधान केवल भारत कर सकता है, भारत की विश्व गुरु बनने की छवि को परिलक्षित करता है। जनसंख्या की दृष्टि से भारत विशाल देश है जहाँ विभिन्न संस्कृतियों का निवास है। सीमित संसाधनों द्वारा असीमित जनसंख्या का पालन पोषण करना तथा साथ ही विश्व के प्रति भी मानवीय भूमिका निभाना, यह हमारे देश की सांस्कृतिक मूल्यों के परिपालना द्वारा ही संभव है।

सन्दर्भ:

1. कुमार, रजनीश (2023, फरवरी 16); भारत की ताबडतोड मदद से क्या तुर्की अपना तेवर छोड देगा? www.bbc.com
2. ndma.gov.in/hi
3. ओझा, विवेक - आपदा प्रबंधन और वैश्विक पहल.
4. आपदा प्रभावित देशो की मदद के लिए भारत ने हमेशा ही एक सच्चे साथी की भूमिका निभाई। newsonair.com (2023, फरवरी 15)
5. उपरोक्त
6. वैश्विक आपदा प्रबंधन पर भारत की पहल, https://www.jagran.com>editorial (2019, सितम्बर 17)
7. भारत की भूमिका का विस्तार का समय -(2022, दिसम्बर 25) दैनिक जागरण ।
8. न्यूज डेस्क, (2023, जनवरी 16), दैनिक उजाला
9. न्यूज डेस्क, (2023, अप्रैल 4), अमर उजाला
10. प्रधानमंत्री क्रार्यालय, https://pib.gov.in, (2023, मई 18) रीलिज्ड आई डी - 1927163
11. सेडांई फ्रेमवर्क https://sdma.sq.gov.in/globalinitiatives
12. https://ndmindia.mha.gov.in
13. NDM India https://ndmindia.mha.gov.in
14. https://www.isro.gov.in

लेखिका की जीवनी :

प्रस्तुत शोध पत्र की लेखिका डॉ. सोनाली टाँक है। लेखिका का जन्म जयपुर, राजस्थान में हुआ और यही पर सम्पूर्ण पालन पोषण हुआ। लेखिका की स्कूली शिक्षा डी ए वी पब्लिक स्कूल जयपुर से हुई। महाविद्यालयी शिक्षा महारानी कॉलेज जयपुर से पूर्ण की। स्नातकोत्तर डिग्री राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से प्राप्त की। वर्ष 2010 में लेखिका ने राजनीति विज्ञान विषय से नेट / जे आर एफ परीक्षा उत्तीर्ण की है। शोध प्रबन्ध राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से 2014 में पूर्ण किया जो 2015 जुलाई में राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा अवार्ड किया गया। लेखिका वर्तमान में राजकीय महाविद्यालय, पुष्कर, अजमेर में राजस्थान सरकार द्वारा संचालित विद्या सम्बल योजना में वर्ष 2021, सितम्बर से राजनीति विज्ञान विभाग की सहायक आचार्य (अतिथि) के रूप में कार्यरत है।